परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्थान – मुम्बई

कक्षा – छठवीं

विषय – संस्कृत

सूक्तिस्तबक:

HAND OUT-PDF- MODULE- 1

प्रस्तुत कर्ता – राम अधार राम

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक – हिन्दी / संस्कृत
परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय – 1, जादूगोड़ा

बालादपि ग्रहीतव्यं युक्तमुक्तं मनीषिभि: ।
रवेरविषये किं न प्रदीपस्य प्रकाशनम् ।।

श्लोकार्थ- विद्वानों ने ठीक ही कहा है कि छोटे बच्चों से भी उपयुक्त या उचित बातें ग्रहण कर लेना चाहिए । सूर्य के नहीं रहने पर या अस्त होने पर दीपक का प्रकाश कर लेना चाहिए ।

पुस्तके पठित: पाठ: जीवने नैव साधित: ।
किं भवेत् तेन पाठेन जीवने यो न सार्थक: ।।

श्लोकार्थ - पुस्तक में पढ़े हुए पाठ या दी गई शिक्षा का यदि जीवन में उपयोग नहीं किया तो ऐसे पाठ से क्या लाभ है जो जीवन में सार्थक नहीं है ।

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति मानवा: ।
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ।।

श्लोकार्थ - प्रिय वचन बोलने से सभी मनुष्य प्रसन्न होते हैं इसलिए प्रिय बोलने में किसी प्रकार की कंजूसी नहीं करना चाहिए ।

गच्छन् पिपीलको याति योजनानां शतान्यपि ।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ।।

<u>श्लोकार्थ</u> -चलता हुआ चींटी सैकड़ों योजन की दूरी तय कर लेता है, चला जाता है । लेकिन तीव्र गति से उड़ने वाला गरुड़ पक्षी न चलने पर एक कदम भी नहीं जाता है ।

काक: कृष्ण: पिक: कृष्ण: को भेद: पिककाकयो: ।
वसन्तसमये प्राप्ते काक: काक: पिक: पिक: ।।

<u>श्लोकार्थ</u> - कौआ भी काला होता है और कोयल भी काली होती है । इन्हें पहचानना कठिन होता है । वसन्त आने पर कौए और कोयल की पहचान हो जाती है ।